जो प्यासा हो

jo pyāsā ho

If Anyone Thirsts

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 15]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from
aalmeidah https://pixabay.com/illustrations/nature-background-drawing-sketch-7055960/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

जो प्यासा हो	3
वह मेरे पास आए	4
जो ईमान लाए	6
वह पिए	7
तब पानी की नहरें बह निकलेंगी	8
मंज़ूर या मरदूद?	9
इंजील, यूहन्ना 7:37-52	9

एक दिन ईसा मसीह बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। झोंपड़ियों की ईद थी। इस ईद पर लोग कच्ची झोंपड़ियों में रहते थे। यह ईद तालीम देने का अच्छा मौक़ा था।

► **तालीम देने का अच्छा मौक़ा क्यों था?**

यह बात समझने के लिए ज़रूरी है कि हम इस ईद का बुनियादी मक़सद समझ लें।

► **मक़सद क्या था?**

फ़सलों की ख़ुशी। इस ईद पर लोग ख़ुशी मनाते थे कि फ़सलें उग आई हैं। अब फ़सल का ख़ास ताल्लुक़ बारिश से है। बारिश कम हो तो फ़सल भी कम होगी। इसलिए इस ईद पर लोग दुआ भी करते थे कि आनेवाले साल में बारिशें पड़ें।

लेकिन साथ साथ वह अल-मसीह की आमद भी याद करते थे।

► **क्यों?**

अल-मसीह के आने का एक निशान कसरत का पानी था। सदियों पहले पेशगोई की गई थी कि उस वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के नीचे से ज़िंदगी का पानी बह निकलेगा (ज़करियाह 14:8; हिज़कियेल 47:1)।

तब तमाम क़ौमें झोंपड़ियों की ईद मनाने यरूशलम आया करेंगी (ज़करियाह 14:16)।

ग़रज़ झोंपड़ियों की ईद पर लोग ख़ासकर दो बातों की ख़ुशी मनाते थे। पहले, इस साल फ़सलों को ख़ूब पानी मिला है। दूसरे, एक दिन हमें ज़िंदगी का पानी भी मिलेगा—उस दिन जब अल-मसीह आएगा।

► **ईद के दिन लोग क्या करते थे?**

उस दिन इमाम चश्मे से पानी लेकर बैतुल-मुक़द्दस की क़ुरबानगाह पर उंडेल देता था। साथ साथ लोग मसीहाना ज़माने के बारे में यह पेशगोई दोहराते थे कि

> तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी भरोगे। (यसायाह 12:3)

पानी उंडेलने से यह याद किया जाता था कि ख़ुदा जो पानी देता रहता है एक दिन ज़िंदगी का पानी भी देगा।

अब हम वह कुछ समझ सकते हैं जो उस ईद पर हुआ। ईद के आख़िरी दिन ख़ुदावंद ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा,

> जो प्यासा हो वह मेरे पास आए,
> और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए।
> कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ 'उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी।' (यूहन्ना 7:37-38)

► **ईसा मसीह क्या कहना चाहता है?**

पहली बात:

जो प्यासा हो

► **जो प्यासा है वह किस चीज़ के लिए तड़पता है?**

पानी के लिए।

► **क्या वह आम पानी के लिए तड़पता है?**

नहीं। ईसा मसीह आम पानी की बात नहीं कर रहा।

► **फिर क्या?**

यह वह पानी है जिसके इंतज़ार में लोग थे—अल-मसीह का पानी, ज़िंदगी का पानी जो बैतुल-मुक़द्दस से बह निकलेगा। यह वह आसमानी पानी है जो अबदी ज़िंदगी दिलाता है।

► **ज़िंदगी का यह पानी क्या है?**

यूहन्ना ख़ुद इसका मतलब बताता है,

> ‘ज़िंदगी के पानी’ से वह रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था। (यूहन्ना 7:39)

► **यूहन्ना के मुताबिक़ ज़िंदगी का पानी क्या है?**

यह आम पानी नहीं है। यह पानी रूहुल-क़ुद्स है।

► **लेकिन रूहुल-क़ुद्स क्या है?**

अगले आयात में हम रूहुल-क़ुद्स के बारे में और सीखेंगे। यहाँ यह जानना काफ़ी है कि रूहुल-क़ुद्स ज़िंदगी का यह पानी है। रूहुल-क़ुद्स उस वक़्त नाज़िल नहीं हुआ था। जब ईसा मसीह को आसमान पर उठा लिया गया तब ही रूहुल-क़ुद्स नाज़िल हुआ।

रूहुल-क़ुद्स फ़रिश्ता नहीं है। वह तसलीस में शामिल है। तसलीस का मतलब यह नहीं कि तीन ख़ुदा हैं। एक ही ख़ुदा है। बाप ख़ुदा है, फ़रज़ंद ख़ुदा है और रूहुल-क़ुद्स ख़ुदा है। लेकिन ख़ुदा में यह तीनों अलग हैं। जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तब रूहुल-क़ुद्स हमारे दिलों में आकर बसने लगता है। और चूँकि एक ही ख़ुदा है इसलिए रूहुल-क़ुद्स के आने से बाप और फ़रज़ंद भी दिल में आ बस्ते हैं।

रूहुल-क़ुद्स से हम ख़ुदा की मौजूदगी से सेर हो जाते हैं। तब ही हमारे दिल उसकी मुहब्बत और तसल्ली से भर जाते है।

► **क्या आप प्यासे हैं? क्या आप उस इलाही सेरी के लिए तड़पते हैं जो सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए दे सकता है?**

वही हमारी अबदी ज़िंदगी की गारंटी है। दूसरी बात,

वह मेरे पास आए

► **प्यासे को क्या करना है ताकि वह पानी पी सके?**

ईसा मसीह फ़रमाता है,

> जो प्यासा हो वह मेरे पास आए। (यूहन्ना 7:39)

अमरीका के किसी रेगिस्तान में पानी का अच्छा चश्मा वाक़े है। एक दिन मालूम हुआ कि क़रीब ही किसी औरत की सूखी हुई लाश पड़ी है। उसके पास एक काग़ज़ था। उस पर लिखा था, “हाय! पानी चाहिए, पानी! मैं प्यास से मर रही हूँ।” अफ़सोस, दो मील आगे चश्मा था जिसमें पानी उबल रहा था। कितनी अलमनाक बात। वह पानी के क़रीब ही मर गई थी।

► **मेरे दोस्त, क्या आप प्यासे हैं?**

चश्मे के पास आओ। वह क़रीब ही है। रेगिस्तान में मत रहना। ज़िंदगी का पानी दस्तयाब है। यह वह पानी है जो ख़ुदा की तरफ़ से निकलता है। यह वह पानी है जिससे हमें हमेशा की ज़िंदगी मिलती है।

कितने लोग दुनिया में रहते हुए मुरदे हैं।

► **किस तरह?**

यों कि वह ज़िंदगी के पानी के पास नहीं आए हैं। शायद उनके पास दौलत हो। लेकिन न ख़ुदा की मुहब्बत, न उसकी भरपूर ख़ुशी या तसल्ली उनके दिलों में बसती है। इसलिए वह ज़िंदा हालत में मुरदे हैं।

► **क्या आप ज़िंदगी के पानी के प्यासे हैं?**

उसके पास आओ। तीसरी बात,

जो ईमान लाए

प्यासा होना ज़रूरी है। लेकिन जो चश्मे के पास न आए वह प्यासा रहता है। और जो उसके पास आए उसके लिए ज़रूरी है कि वह ईमान लाए। उन्नीसवीं सदी में एक जहाज़ बनाम रॉयल चार्टर ( ) ऑस्ट्रेलिया से रवाना होकर इंग्लैंड के क़रीब पहुँचा। ख़बर आई तो मुसाफ़िरों के अज़ीज़ बंदरगाह में जहाज़ का इंतज़ार करने लगे। लेकिन वह कभी न पहुँचा। थोड़ी दूरी पर वह तूफ़ान में तबाह हुआ। तक़रीबन 450 मुसाफ़िर डूब गए। जब किसी की बीवी को बताया गया कि शौहर नहीं बचा तो वह चीख़ उठी, “हाय, घर के इतने क़रीब और फिर भी तबाह!”

मेरे अज़ीज़, जो अल-मसीह के क़रीब आता है लेकिन ईमान नहीं लाता वह उस मुरदे की मानिंद है। उसके बारे में कहा जा सकता है, “घर के इतने क़रीब और फिर भी तबाह!”

दो-चार मुसाफ़िर तैरते तैरते साहिल पर पहुँच गए। कुछ मुसाफ़िरों ने ऑस्ट्रेलिया में सोना हासिल किया था, और उन्होंने यह सोना जिस्म से बाँधकर बचने की कोशिश की। लेकिन अफ़सोस—सोना इतना भारी था कि वह तैर न सके और डूब मरे।

जब आप अल-मसीह के पास आते हैं तो उसे कुछ नहीं दिखा सकते। आप ख़ाली अपने आपको उसके सुपुर्द कर सकते हैं। न सोना न कोई

नेक काम आपको बचाएगा। ईमान का यही मतलब है कि हम ख़ाली अपने आपको उसके सुपुर्द करें और उसे बताएँ, “ऐ मेरे आक़ा, मैं आ गया हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है जो मुझे मंज़ूर करा सके। न दौलत न अच्छा किरदार न नेक काम। लेकिन तेरा ही फ़ज़ल काफ़ी है। नजात का वह काम काफ़ी है जो तूने मेरी ख़ातिर किया है। तू ही मुझे क़बूल कर। मुझे अपने पानी से सेर कर।”

चौथी बात,

वह पिए

अब हमें प्यास महसूस हुई है। हम ख़ाली हाथ उसके पास आए हैं। हम उस पर ईमान लाए हैं।

► **अब क्या?**

अब हम पी सकते हैं।

► **क्या पी सकते हैं?**

ज़िंदगी का पानी। तब रूहुल-क़ुद्स हमारे अंदर बसेगा और हम सेर हो जाएँगे।

ग़रज़, चार चीज़ें दरकार हैं : प्यास, उसके पास आना, ईमान लाना और पीना।

तब पानी की नहरें बह निकलेंगी

ईसा मसीह फ़रमाता है कि पाक नविश्तों के मुताबिक़ उसके अंदर से पानी की नहरें बह निकलेंगी।

► **इसका क्या मतलब है?**

नबियों ने पेशगोई की थी कि अल-मसीह के आने पर यरूशलम से पानी की नहरें बह निकलेंगी। और यह ख़ास पानी होगी। यह ज़िंदगी का पानी होगा। अबदी ज़िंदगी बख़्शनेवाला पानी। अब ईसा मसीह फ़रमा रहा है कि मुझसे ही पानी की यह नहरें बह निकलेंगी। मैं ही ज़िंदगी का सरचश्मा हूँ। यही वजह है कि प्यासे उसके पास आते हैं। उस पर ईमान लाते हैं। उसका पानी पीते हैं। और जब हम ख़ूब पानी पीते हैं तो हमसे भी पानी निकलता है।

► **किस तरह?**

जब हम रूहुल-क़ुद्स से सेर हो जाते हैं तो वह हमारे अंदर से बहने लगता है।

► **इसका क्या मतलब है?**

- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हमारे मैले दिल धोए जाते हैं।
- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हम उसकी पाकीज़गी से भर जाते हैं।

- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हम रूहानी फल लाते हैं।
- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो दूसरे हमारे फल से बरकत पाते हैं।
- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हमारी आसमानी मनज़िल यक़ीनी है।

मंज़ूर या मरदूद?

► **जो लोग यह बातें सुन रहे थे क्या वह ख़ुश हुए?**

नहीं। वह एक बार फिर बहस-मुबाहसा करने लगे कि क्या यह सचमुच अल-मसीह है?

यों उनमें फूट पड़ गई। कुछ उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे। मज़हबी राहनुमाओं ने भी पहरेदार भेज दिए थे ताकि उसे पकड़े। लेकिन पहरेदार उसके कलाम से इतने मुतअस्सिर हुए कि ख़ाली हाथ वापस आए।

ईसा मसीह के बारे में हमेशा फूट पड़ती है। कुछ उसे क़बूल करते हैं और कुछ उसे रद करते हैं।

► **सवाल यह है कि हमने क्या किया? क्या हमने उसे क़बूल किया है? क्या हम प्यासे होकर उसके पास आए हैं। क्या हमने ईमान लाकर ज़िंदगी का यह पानी पी लिया है?**

इंजील, यूहन्ना 7:37-52

ईद के आख़िरी दिन जो सबसे अहम है ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी’।” (‘ज़िंदगी के पानी’ से वह रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

ईसा की यह बातें सुनकर हुजूम के कुछ लोगों ने कहा, “यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिसके इंतज़ार में हम हैं।”

दूसरों ने कहा, “यह मसीह है।”

लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, “मसीह गलील से किस तरह आ सकता है! पाक कलाम तो बयान करता है कि मसीह दाऊद के ख़ानदान और बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह पैदा हुआ।” यों ईसा की वजह से लोगों में फूट पड़ गई। कुछ तो उसे गिरिफ़्तार करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका।

इतने में बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा को लेकर नहीं आए थे, इसलिए राहनुमाओं ने पूछा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”

पहरेदारों ने जवाब दिया, “किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।”

फ़रीसियों ने तंज़न कहा, “क्या तुमको भी बहका दिया गया है? क्या राहनुमाओं या फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं! लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह हुजूम लानती है!”

इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल उठा, “क्या हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।”

दूसरों ने एतराज़ किया, “क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुक़द्दस में तफ़तीश करके ख़ुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आएगा।” यह कहकर हर एक अपने अपने घर चला गया।